"Mandala" Theory (मंडल सिद्धान्त)

प्राचीन भारतीय विचारकों के पारस्परिक मुद्दों को आवश्यक माना है। एक राज्य दूसरे राज्य के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए, इसके लिए मण्डल सिद्धान्त को प्रतिस्थापित किया है। मनु ने मण्डल सिद्धान्त के मूल में चार प्रकृतियों विजिगीषु, शत्रु मध्यम तथा उदासीन को रखा है। कामन्दक के अनुसार मंडल में मित्र उदासीन तथा रिपु को शामिल किया जाता है। कौटिल्य के अनुसार मंडल में कुल 12 प्रकृतियाँ पाई जाती हैं। यह राज्य की वाह्य नीति से संबंधित है। इस सिद्धान्त की सबसे अधिक विवेचना कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में की है।

राज्यों का विभाजन:—

एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ किस प्रकार का संबंध हो, इसके लिए कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त को अपनाया है। इस सिद्धान्त के अनुसार कौटिल्य ने राज्यों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभक्त किया है।

1. शत्रु राज्य
2. मित्र राज्य
3. मध्यम राज्य
4. उदासीन राज्य

(1) शत्रु राज्य:— कौटिल्य के अनुसार जिन राज्यों की सीमाएं एक दूसरे से मिलती रहती हैं, वे समान हित, और विस्तार की आकांक्षा के कारण एक दूसरे के स्वाभाविक शत्रु होते हैं। ऐसे राज्यों के समक्ष सदैव सीमा सम्बन्धी समस्याएं पैदा होती रहती हैं। कौटिल्य की भांति मनु ने भी परस्पर सम्बन्ध सीमाओं वाले राज्यों को शत्रु राज्य माना है। शत्रु राज्य के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए इस बारे में कौटिल्य ने अपना मत प्रकट किया है। कौटिल्य का मत है कि शत्रु राज्य से समय, परिस्थिति तथा उसकी शक्ति देखकर व्यवहार करना चाहिए। विपत्ति से ग्रसित होने पर शत्रु राज्य आक्रमण के योग्य है।

2. मित्र राज्य:→ मित्र राज्य के दूसरी ओर शत्रु राज्य की सीमा से सम्बन्ध राज्य को कौटिल्य ने मित्र

2. राज्य कहते हैं। मित्र राज्य तीन प्रकार के होते हैं।

प्रकृति मित्र, सहज मित्र, कृत्रिम मित्र। शत्रु राज्य की सीमाओं से सम्बन्धित दूसरी ओर का राज्य प्रकृति मित्र है। इसके विपरित माता-पिता से किसी प्रकार सम्बन्धित राज्य सहज मित्र है। धन तथा जीवन हेतु आश्रय ग्रहण किया हुआ राज्य कृत्रिम मित्र है।

3. मध्यम राज्य :→

कौटिल्य के अनुसार मध्यम राज्य का अभिप्राय उस राज्य से है, जो अपने तथा शत्रु राज्य दोनों की सीमा पर स्थित है और दोनों राज्यों को एक साथ अलग-अलग सहायता देता है। वह मध्यम राज्य है। इस प्रकार का राज्य, विजयाभिलाषी राज्य तथा शत्रु दोनों से अधिक शक्तिशाली होता है।

4. उदासीन राज्य :→

उदासीन राज्य का अभिप्राय उस राज्य से है, जो अपनी शक्तिशाली सप्त प्रकृतियों के कारण विजयाभिलाषी तथा शत्रु मध्यम तीनों राज्यों को अलग-अलग अथवा एक साथ सहायता देने या अनुग्रह करने में समर्थ हो।

राज्य मंडल के घटक

उपर्युक्त चार प्रकार के राज्यों को कौटिल्य ने राज्य मण्डल का घटक माना है। इन राज्यों में प्रत्येक के राज्यों का अपना पृथक मण्डल बनता है। विजयाभिलाषी राज्य उसका मित्र राज्य ~~[illegible]~~ मित्र ~~[illegible]~~ मित्र ~~[illegible]~~ को क्रमशः तीन प्रकृति कहा जाता है। इन तीनों राज्यों में से प्रत्येक राज्य की छः प्रकृतियों (राजा, मंत्री, कोष, दण्ड, जनपद को मिलाकर अठारह प्रकृतियां होती हैं, जिनसे राज्य मण्डल का निर्माण होता है। ठीक इसी प्रकार शत्रु राज्य तथा उदासीन राज्य भी क्रमशः शत्रु मण्डल, मध्यम मण्डल तथा उदासीन मण्डल का निर्माण करते हैं। कौटिल्य का मत है कि इस राज्य मण्डल में विजयी राजा तथा उसके मित्र राजा के बीच में फंसा हुआ यदि कोई शत्रु राज्य है तो पीड़ित किया जा सकता है।

कौटिल्य की भांति मनु ने भी राज्य

3. मण्डल की चर्चा की है। मनु ने राज्य की बारह प्रकृतियाँ मानी है और साठ प्रत्य प्रकृतियाँ। इनके योग से राज्य मण्डल युक्त होता है। दशकुमार चरित में राज्य मण्डल की प्रकृतियों की ओर संकेत किया गया है।

डा० काणे के अनुसार " मण्डल के मूल में राज्यों के बीच शक्ति संतुलन स्थापित करने की बात निहित है। कुछ राज्यों के बीच में मित्रता रहेगी तो स्वभावतः कुछ राज्य विरोधी भावों से प्रेरित हो, वह एक गुट में मिल जाएंगे। कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त को शक्ति सिद्धान्त से सम्बन्धित किया है और यह बतलाता है कि राजा अपनी शक्तियों को जिस सीमा तक कार्यान्वित करेगा, उसी सीमा तक उसके राज्य का कल्याण भी होगा।

Scanned with CamScanner